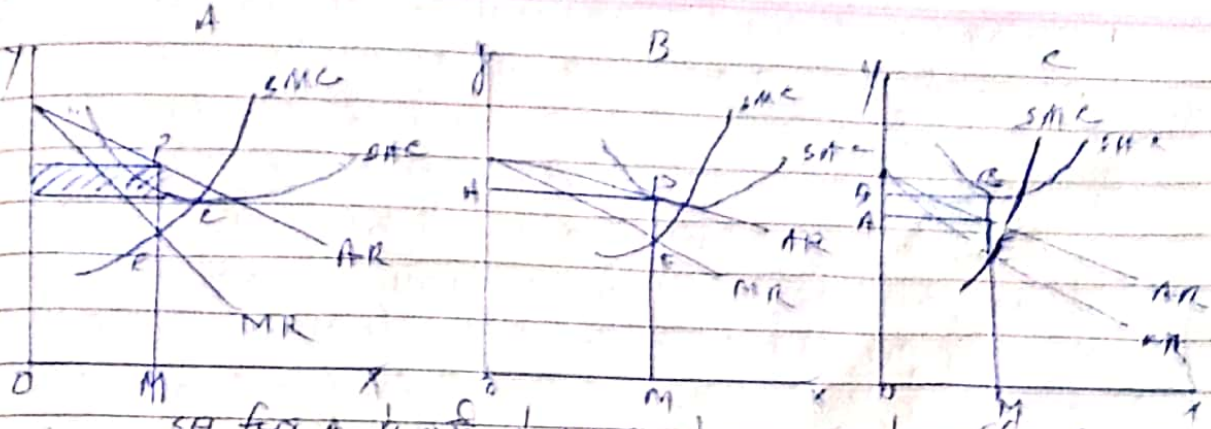

इस चित्र A में फर्म के साम्य की अवस्था को प्रदर्शित किया गया है। चित्र में साम्य बिन्दु E है जहां सीमान्त लागत वक्र सीमान्त आगम वक्र को काटता है। साम्य की अवस्था में कीमत PM है तथा उत्पादन की मात्रा OM है। फर्म की कुल औसत लागत कीमत से कम है। अतः फर्म को प्रति इकाई लाभ PC तथा कुल लाभ ABCP के बराबर होता है फर्म को असामान्य लाभ इसलिए प्राप्त होता है क्योंकि अल्पकाल में नई फर्म प्रवेश नहीं कर सकती है और फर्म विशेष की स्थानापन्न वस्तुएं उपलब्ध न होने के कारण उसे लाभ प्राप्त होती है

(b) चित्र B में फर्म E बिन्दु पर अपना साम्य स्थापित करती है जहां MR=SMC है। फर्म कुल औसत लागत वस्तु की कीमत के बराबर है अतः फर्म को न लाभ होता है और न हानि। फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

(c) चित्र C में फर्म E बिन्दु पर अपना साम्य स्थापित करती है। साम्य कीमत PM है तथा उत्पादन की मात्रा OM है। फर्म की कुल औसत लागत CM है जो कि कीमत PM से अधिक है, इसी कारण फर्म को प्रति इकाई PC के बराबर हानि होती है जो ABPC के बराबर है। अल्पकाल में फर्म को हानि इसलिए होती है कि फर्म के पैमाने में परिवर्तन नहीं कर सकती है और न ही स्थिर साधनों में कमी परिवर्तन कर सकती है।

B) दीर्घकाल में फर्म का सन्तुलन :- दीर्घकाल में फर्म का साम्य इस प्रकार समझा जा सकता है कि इस काल में समय इतना अधिक होता है कि फर्म मांग में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार अपनी पूर्ति को समायोजित करती है। फर्म अपने आकार में परिवर्तन कर सकती है, चूंकि समय अधिक है तो स्थिर साधनों में परिवर्तन किया जा सकता है। दीर्घकाल में किसी भी फर्म को असामान्य लाभ प्राप्त नहीं हो सकता है क्योंकि यदि फर्म को असाधारण लाभ प्राप्त होता है तो प्रवेश की स्वतंत्रता के कारण नई फर्में बाजार में प्रवेश करेंगी और इनके आ जाने से कुल मांग विभिन्न फर्मों में बंट जायेगी और पहले की अपेक्षा प्रत्येक फर्म को कम हिस्सा प्राप्त होगा। कुल पूर्ति में वृद्धि हो जायेगी

Scanned with CamScanner

फलस्वरूप कीमत कम हो जायगी। फर्मों का प्रवेश उस समय तक चलेगा जब तक कि असामान्य लाभ समाप्त नहीं हो जाता है। इसका कारण यह है कि नई फर्में बाजार में काफी वस्तुओं की मांग को निर्मित करने के लिए कम कीमत निर्धारित करेंगी। इस प्रकार प्रत्येक फर्म को हानि होगी क्योंकि नई फर्में पुरानी फर्मों की मांग छीनने का प्रयास करेंगी जिसके फलस्वरूप नये व पुराने विक्रेताओं की कीमत कम होने के कारण असामान्य लाभ समाप्त हो जायगा।

(ii) दीर्घकाल में किसी फर्म को हानि नहीं हो सकती है — अल्पकाल में तो फर्म हानि का उठाकर उत्पादन करती रहती है इस आशा से कि वह इस हानि की भविष्य में पूर्ति कर लेगी। लेकिन जब दीर्घकाल में हानि होती है तो फर्म उत्पादन बन्द करके उद्योग से बाहर चली जायेगी जिससे उत्पादन का स्तर और वस्तु की पूर्ति कम हो जायगी ऐसा होने से वस्तु की मांग बढ़ेगी और फर्मों को फिर से सामान्य लाभ प्राप्त होने लगेगी।

एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के दीर्घकालीन सन्तुलन की निम्न शर्तें होती हैं (i) सीमान्त लागत सीमान्त आय के बराबर हो। सीमान्त लागत वक्र सीमान्त आय वक्र को नीचे से काटे। दीर्घकाल में फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होगा इसलिए औसत आय औसत लागत के बराबर होगा। दीर्घकालीन साम्य की अवस्था को एक चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है

इस चित्र में सन्तुलन बिन्दु E है जहां दीर्घकालीन सीमान्त लागत वक्र (LMC) सीमान्त आय वक्र (MR) को काटता है। यहां साम्य उत्पादन OM है सन्तुलन बिन्दु पर

औसत आय = TM

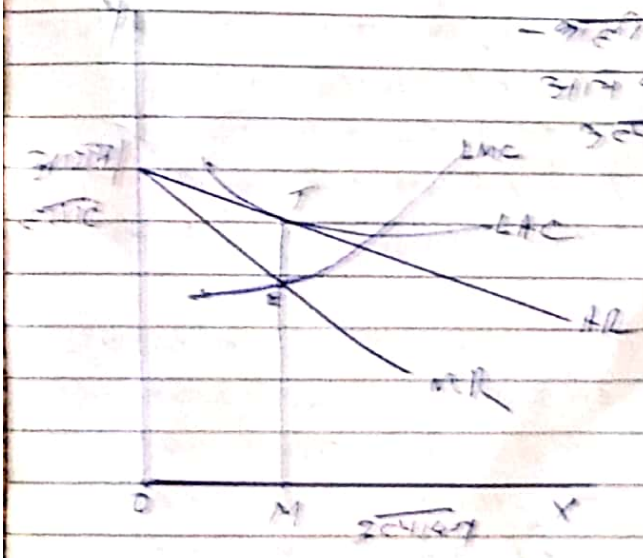

औसत लागत = TM

प्रति इकाई लाभ TM − TM = 0

सन्तुलन साम्य दशा में फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है क्योंकि वस्तु की औसत लागत और औसत आय एक दूसरे के बराबर है

एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में साधन उपयोग — ऐसी प्रतियोगिता के साम्य की स्थिति में उत्पादन की मात्रा अनुकूलतम नहीं होती है इसका कारण यह है कि एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता की औसत आगम रेखा गिरती हुई रेखा होती है जबकि पूर्ण प्रतियोगिता में औसत आगम रेखा एक पड़ी हुई रेखा होती है चूंकि एकाधिकारात्मक